NBT PAGE 3

विषम सेमेस्टर की परीक्षा की तारीख तय

■ एनबीटी सं, लखनऊः एलयू में बीकॉम और बीसीए के विषम सेमेस्टर की परीक्षा की डेट जारी कर दी गई है। बीकॉम ऑनर्स पांचवे सेमेस्टर की परीक्षा 23 फरवरी से और बीकॉम ऑनर्स के तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा 28 मार्च से शुरू होंगी। इसके अलाव पहले सेमेस्टर की परीक्षा 27 फरवरी से होंगी। बीसीए रेग्युलर/ बैक पेपर पहले सेमेस्टर की परीक्षा 27 फरवरी और तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा 28 फरवरी, पांचवे सेमेस्टर की परीक्षा 23 फरवरी से होगी।

पीएचडी अध्यादेश में बदलाव के लिए कमिटी

■ एनबीटी सं, लखनऊः एलयू ने पीएचडी अध्यादेश में संशोधन के लिए कमिटी का गठन कर दिया है। रजिस्ट्रार संजय मेधावी ने बताया कि कमिटी में प्रो.विभूति राय, प्रो. आरके सिंह, प्रो.बिमला जायसवाल, प्रो. आरपी सिंह और प्रो. पूनम टंडन को शामिल किया गया है। कमिटी में पांच शिक्षकों को शामिल किया गया है। डीएसडब्ल्यू प्रो. पूनम टंडन के मुताबिक अध्यादेश में बदलाव के बाद छात्र चार वर्ष के स्नातक के बाद सीधे पीएचडी में दाखिला ले सकेंगे। उन्हीं स्टूडेंट्स को प्रवेश मिलेगा, जिनके 75 प्रतिशत अंक से अधिक होंगे।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : बीकॉम ऑनर्स, बीबीए व बीसीए का परीक्षा कार्यक्रम जारी

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लविवि ने मंगलवार को बीकॉम ऑनर्स, बीबीए व बीसीए पाठ्यक्रमों का परीक्षा कार्यक्रम जारी कर दिया है। विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग ने वेबसाइट पर इन पाठ्यक्रमों का विस्तृत सूची जारी कर इस बात की जानकारी दी।

बीकॉम ऑनर्स पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं 23 फरवरी से 13 मार्च तक चलेंगी। जबकि तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 28 मार्च से शुरू होकर 16 मार्च को समाप्त होंगी। बीकॉम आनर्स प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 27 फरवरी से 17 मार्च तक चलेंगी। बीसीए प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 27 फरवरी से 13 मार्च तक चलेंगी।

बीसीए तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 28 फरवरी से शुरू होकर 14 मार्च को समाप्त होंगी। बीसीए पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं 23 फरवरी से 3 मार्च तक चलेंगी। प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव के मुताबिक, अधिक जानकारी के लिए विवि की वेबसाइट देख सकते हैं। (संवाद)

पीएचडी अध्यादेश में संशोधन के लिए बनी कमेटी

लखनऊ। पीएचडी अध्यादेश में संशोधन के लिए मंगलवार को लखनऊ विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने पांच सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। इस कमेटी की समन्वयक विवि की अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. डॉ पूनम टंडन बनाई गई हैं। इसके अलावा प्रो. विभूति राय, प्रो. आर के सिंह, प्रो. विमल जायसवाल व प्रो. आरपी सिंह को कमेटी का सदस्य नामित किया गया है। नई शिक्षा नीति के मुताबिक, पीएचडी अध्यादेश में संशोधन करने के लिए राजभवन ने 27 जनवरी को लविवि समेत सभी राज्य विश्वविद्यालयों को पत्र लिखा था। पत्र के आदेश के अनुपालन के क्रम में 13 फरवरी को विवि की अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने प्रो. पूनम टंडन ने कुलपति को पत्र लिखकर इस संदर्भ में कमेटी गठित करने का आग्रह किया था। पीएचडी अध्यादेश में संशोधन के बाद विद्यार्थी स्नातक के बाद सीधे पीएचडी में दाखिला पा सकेंगे। इसके लिए उन्हें परास्नातक करने की आवश्यकता नहीं होगी। बशर्ते उसके अंक 75 फीसदी से अधिक होने चाहिए। इससे कम अंक होने पर छात्र को एक वर्ष का परास्नातक करना होगा। कमेटी की समन्वयक प्रो. पूनम टंडन ने बताया कमेटी नया अध्यादेश तैयार करने के लिए वर्तमान अध्यादेश पर विचार करते हुए उसमें नए नियमों को समावेशित कर एक प्रस्ताव तैयार करेगी। जिसे विद्या परिषद और कार्य परिषद की बैठक में रखा जाएगा। (संवाद)

कर्मयोगी व छात्र कल्याण स्कॉलरशिप के लिए मांगे आवेदन

लखनऊ। लविवि ने मंगलवार को स्टूडेंट वेलफेयर फंड के तहत दी जाने वाली स्कॉलरशिप के लिए आवेदन मांगे। विश्वविद्यालय के कुलसचिव कार्यालय की ओर से पत्र जारी कर इस बात की जानकारी दी गई। स्टूडेंट वेलफेयर फंड के तहत उच्च शिक्षा में आर्थिक मदद के लिए विश्वविद्यालय छात्रों को सहायता राशि उपलब्ध कराता है। यह मदद कर्मयोगी व छात्र कल्याण स्कॉलरशिप के अन्तर्गत छात्रों को दी जाती है। प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया पात्र छात्र छात्राएं 22 फरवरी तक डीन व विभाग के अध्यक्ष के माध्यम से अपना आवेदन संबंधित कार्यालय में जमा कर सकते हैं। (संवाद)

पूर्व कुलपति, अर्थशास्त्री प्रो. मुजम्मिल का निधन

माई सिटी रिपोर्टर

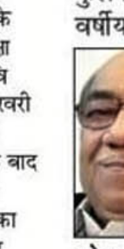

प्रो. मुजम्मिल। (फाइल फोटो)

लविवि में लंबे समय तक किया अध्यापन, सरस्वती व शिक्षकश्री सम्मान से नवाजा गया था

लखनऊ। बरेली व आगरा विवि के कुलपति रहे जाने-माने अर्थशास्त्री 70 वर्षीय प्रो. मोहम्मद मुजम्मिल का मंगलवार को निधन हो गया। दिल्ली एयरपोर्ट पर सुबह अचानक तबियत बिगड़ने पर उन्हें मेदांता हॉस्पिटल ले जाया गया था।

प्रो. मुजम्मिल लखनऊ विवि के अर्थशास्त्र विभाग में लंबे समय तक कार्यरत रहे। ऑक्सफोर्ड विवि के विजिटिंग फेलो भी रहे थे। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें शिक्षकश्री व सरस्वती सम्मान से नवाजा था। वे मूलरूप से सुल्तानपुर जिले के कादीपुर के रहने वाले थे। लखनऊ में उनका राजाजीपुरम में घर था। उनके निधन की सूचना लविवि में आने के बाद उनसे जुड़े शिक्षक शोक में डूब गए। वाणिज्य संकाय से सेवानिवृत्त प्रो. नरसिंह ने बताया कि प्रो. मुजम्मिल का निधन शिक्षा जगत के लिए अपूर्णनीय क्षति है। वह पहले रुहेलखंड विवि बरेली और फिर आगरा विवि के कुलपति रहे। प्रो. मुजम्मिल ने अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में कई किताबें लिखीं। दो दर्जन से अधिक प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखीं। देश-विदेश की शोध पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हुए। लविवि में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. मनोज अग्रवाल समेत कई शिक्षकों ने निधन पर शोक जताया है।

लखनऊ विवि में हुए व्याख्यान में बोले केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे...

'विकास में संतुलन होना चाहिए'

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

विकास में संतुलन होना चाहिए। गरीबों और अमीरों के बीच खाई कम होनी चाहिए। महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इसे पाटने का काम किया। ये बातें मंगलवार को एलयू में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तहत 'पंडित दीनदयाल उपाध्यायः व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषय पर हुए व्याख्यान में भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे ने कहीं। उन्होंने बताया कि पं. दीनदयाल का जीवन बेहद सादगी भरा था। वह केवल दो वस्त्र रखते थे। एक पहनते थे तो दूसरा साथ में रखते।

व्याख्यान के दौरान मंत्री ने समाज कार्य विभाग के 50 साल पूरे होने पर बधाई भी दी। इस मौके पर विभाग के हेड प्रो. अनूप कुमार भारतीय ने कहा कि शोध पीठ ने कई गांवों को गोद ले रखा है। जल्द ही माल के मवई खुर्द, देवरी ग़ज़ा और अकबरपुर गांव भी गोद लिए जाएंगे।

कार्यक्रम में एलयू वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि दीनदयाल शोधपीठ के जरिए आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ भी काम किया जा रहा है। प्रो. अरविंद अवस्थी ने कहा कि पं. दीनदयाल के विचारों में इंसान, प्रकृति और सामाजिक मूल्यों का समन्वय था। वहीं, एमएलसी मुकेश शर्मा ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और संघर्षों के बारे में आधुनिक युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। इस दौरान प्रो. राकेश द्विवेदी समेत कई शिक्षक और करब 300 स्टूडेंट मौजूद रहे।

आधा निवेश भी आया तो संवर जाएगा भविष्य

लविवि में व्याख्यान के दौरान बोले केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय

संवाद न्यूज एजेंसी

लविवि में व्याख्यान के दौरान बोलते भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय। - संवाद

लखनऊ। समाजकार्य विभाग के 50 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ ने मंगलवार को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय ने कहा कि इन्वेस्टर्स समिट में 33 करोड़ 50 लाख के निवेश के प्रस्ताव आए हैं। विपक्ष कितनी भी कमी निकाल ले, यदि इसका 50 प्रतिशत भी आ गया तो युवाओं का भविष्य बेहतर होगा।

डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन से भारत की समृद्धि बढ़ी है। उनके अंदर सादगी के साथ संगठनात्मक कौशल था। उनसे विद्यार्थियों को प्रेरणा लेनी चाहिए। विशिष्ट अतिथि एमएलसी मुकेश शर्मा ने कहा कि पं. दीनदयाल ने पूरे राष्ट्र को एकात्म मानववाद का दर्शन दिया। कुलपति प्रो. आलोक राय ने बताया कि कोविड के दौरान जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों का निधन हुआ था, उनकी सहायता कुलपति केयर फंड से की जा रही है। समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष व पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के निदेशक डॉ. अनूप कुमार भाटी, कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. अरविंद अवस्थी, चीफ प्रॉक्टर प्रो. राकेश द्विवेदी ने भी संबोधित किया। संचालन सर्वज्ञ अस्थाना ने किया। डॉ. रजनीश यादव, डॉ. उमेंद्र कुमार, प्रो. गुरुनाम सिंह आदि मौजूद थे।

इन्हें किया गया सम्मानित

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री ने दीनदयाल उपाध्याय से जुड़ी योजनाओं में जागरूकता के लिए एक कंपनी के सीईओ अमित इकबाल श्रीवास्तव को पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से नवाजा। इस दौरान गोद लिए गए तीन गांवों के प्रधान राधा शुक्ला, विजय कुमार व श्रीप्रकाश को भी सम्मानित किया गया।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत मंगलवार को मुख्य अतिथि केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे ने व्याख्यान में संबोधित किया।

दीनदयाल जैसा जीवन जीना असंभव

लखनऊ। एलयू में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत मंगलवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। यहां मुख्य अतिथि केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन बेहद सादगी भरा था। जिसकी कल्पना आज के राजनेताओं में करना लगभग असंभव है।

महिला शोधार्थियों की संख्या 200% बढ़ी

लखनऊ। एलयू में नैक ए प्लस प्लस होने के बाद से शोध के लिए अभ्यर्थियों की संख्या में बढोतरी हुई है। साथ ही महिला शोधार्थियों की संख्या पिछले वर्ष की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक है। पीआरओ डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि जहां सत्र 2020-21 में 213 महिला शोधार्थियों ने पीएचडी में प्रवेश लिया था। वहीं सत्र 2021-22 में 632 महिला शोधार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया।

सत्र 2022-23 के आवेदन जारी हैं जिसकी आखिरी तारीख 19 फरवरी तय है। इसमें अभी तक लगभग 60 प्रतिशत आवेदन महिला शोधार्थियों के आ चुके हैं।

एलयूः पीएचडी अध्यादेश में बदलाव के लिए कमेटी

लखनऊ। एलयू ने पीएचडी अध्यादेश में संशोधन के लिए पांच सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया है। डीएसडब्ल्यू प्रो. पूनम टंडन ने बताया कि अध्यादेश में बदलाव के बाद छात्र चार वर्ष के स्नातक के बाद सीधे पीएचडी पाठ्यक्रम में दाखिला ले सकेंगे।

पीएचडी में उन्हीं स्टूडेंट्स को प्रवेश मिलेगा, जिनके 75 प्रतिशत अंक से अधिक होंगे। रजिस्ट्रार संजय मेधावी ने बताया कि अध्यादेश में बदलाव के लिए कमेटी में प्रो.विभूति राय, प्रो. आरके सिंह, प्रो.बिमला जायसवाल, प्रो. आरपी सिंह और प्रो. पूनम टंडन को शामिल किया गया है।

बीकॉम, बीसीए की विषम सेमेस्टर परीक्षा 23 से : एलयू में बीकॉम और बीसीए के विषम सेमेस्टर की परीक्षा तारीख जारी कर दी गई है।

बीकॉम ऑनर्स पांचवे सेमेस्टर की परीक्षा 23 फरवरी और बीकॉम ऑनर्स के तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा 28 मार्च से शुरू होगी। इसके अलावा पहले सेमेस्टर की परीक्षा 27 फरवरी से कराई जाएंगी। बीसीए रेगुलर, बैक पेपर के पहले सेमेस्टर की परीक्षा 27, तीसरे की 28, पांचवे की परीक्षा 23 से होगी।

VoL PAGE 5

लविवि : महिला शोधार्थियों की संख्या में 200 प्रतिशत वृद्धि

लखनऊ। लविवि में नैक ए प्लस प्लस होने के बाद से शोध के लिए अभ्यर्थियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। साथ ही महिला शोधार्थियों की संख्या पिछले वर्ष की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक है। जहां शैक्षणिक सत्र 2020-21 में 213 महिला शोधार्थियों ने पीएचडी में प्रवेश लिया था। वहीं सत्र 2021-22 में 632 महिला शोधार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया। लविवि प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि सत्र 2022-23 के आवेदन जारी हैं जिसकी आखिरी तारीख 19 फरवरी तय है। इसमें अभी तक लगभग 60 प्रतिशत आवेदन महिला शोधार्थियों के आ चुके हैं। जल्द ही प्रवेश परीक्षा भी कराने की योजना है। राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध करने वाले अभ्यर्थियों का रुझान विश्वविद्यालय की ओर बहुत बढ़ गया है। कई देशों के 35 अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया है। यह सत्र 2020-21 की तुलना में 100 प्रतिशत से अधिक है। उन्होंने बताया कि सत्र 2020-21 में जहां देश के 12 राज्यों के शोधार्थियों ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वहीं सत्र 2021-22 में देश के 19 राज्यों के शोध विद्यार्थियों ने एडमिशन लिया। जबकि सत्र 2022-23 की पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया में अब तक 26 राज्यों से शोध करने के लिए अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है।

AMRIT VICHAR PAGE 4

लविवि व भाषा विवि में पीएचडी के लिए आवेदन 19 तक

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय और ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में सत्र 2022-23 में पीएचडी के लिए आवेदन करने का अभी 19 फरवरी तक मौका है।

भाषा विवि के पीएचडी कोऑर्डिनेटर प्रो. एहतेशाम अहमद ने बताया कि पहले आवेदन करने की अंतिम तिथि 11 फरवरी थी, जिसको बढ़ा कर अब 19 फरवरी कर दिया गया है। इच्छुक विद्यार्थी आवेदन शुल्क 2,000 रुपये के साथ 1,000 रुपये के विलंब शुल्क का भुगतान कर आवेदन कर सकेंगे। प्रवेश परीक्षा की तिथि की घोषणा जल्द ही विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी।

पीएचडी के प्रति महिला अभ्यर्थियों की बढ़ रही रुचि

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि सत्र 2020-21 में जहां 213 महिला शोधार्थियों ने पीएचडी में प्रवेश लिया था, वहीं, नैक ग्रेड मिलने के बाद सत्र 21-22 में 632 महिला शोधार्थियों ने प्रवेश लिया जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 200 प्रतिशत अधिक है। सत्र 2021-22 में पुरुष शोधार्थियों की अपेक्षा महिला शोधार्थियों ने अधिक संख्या में प्रवेश लिया। सत्र 2022-23 के आवेदन प्रचलन में हैं एवं अभी तक लगभग 60 प्रतिशत आवेदन महिला शोधार्थियों के आ चुके हैं।

नैक में ए डबल प्लस मिलने से अधिक आ रहे आवेदन

लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से दावा किया जा रहा है कि नैक से ए डबल प्लस मिलने के बाद से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध करने वाले अभ्यर्थियों का रुझान विश्वविद्यालय की ओर बहुत बढ़ गया है। विभिन्न देशों के 35 अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया है जो सत्र 2020-21 की तुलना में 100 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

लविवि : प्रो.मोहम्मद मुजम्मिल का निधन

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के पूर्व प्रोफेसर व बरेली तथा आगरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर मोहम्मद मुजम्मिल का मंगलवार को दिल्ली के मेदांता में हृदयगति रुकने से निधन हो गया। इस खबर के बाद उनके शुभचिंतकों के बीच दुख की लहर दौड़ गई है। लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर एमके अग्रवाल ने बताया कि वह राजाजीपुरम में रहते थे। उनके परिवार में पत्नी, दो बेटे व एक बेटी है। बेटी विदेश में रहती है। उनके निधन की सूचना उसे दे दी गई है। बताया जा रहा है कि प्रोफेसर मोहम्मद मुजम्मिल अपने बेटे से मिलने दिल्ली गए थे। मंगलवार को उनकी तबियत बिगड़ने पर सुबह करीब 10 बजे मेदांता में भर्ती कराया गया था। जहां इलाज के दौरान उनका निधन हो गया। प्रोफेसर मुजम्मिल को लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहते हुए वर्ष 2012 में एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली का कुलपति बनाया गया था। वर्ष 2013 में वह डॉ. बीआर आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के कुलपति बने।

JAGRAN CITY PAGE III

लवि : अर्थशास्त्र विभाग के पूर्व प्रो . मोहम्मद मुजम्मिल का निधन

मोहम्मद मुजम्मिल (फाइल फोटो)

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय (लवि) के पूर्व छात्र एवं अर्थशास्त्र विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर रहे मोहम्मद मुजम्मिल का मंगलवार को निधन हो गया। लखनऊ विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (लूटा) अध्यक्ष डा. विनीत वर्मा ने बताया कि वह गत दिनों बेटे के पास दिल्ली गए थे। मंगलवार को बेंगुलरु जाने के लिए दिल्ली में ही एयरपोर्ट गए थे। वहीं पर उन्हें हार्ट अटैक हुआ। इसके बाद मेदांता अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका निधन हो गया। वह 68 वर्ष के थे। दिल्ली में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

लवि के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. एमके अग्रवाल ने बताया कि मूल रूप से सुलतानपुर के निवासी प्रोफेसर मोहम्मद मुजम्मिल ने लखनऊ विश्वविद्यालय में वर्ष 1974 में एमए अर्थशास्त्र की डिग्री ली। वह अपने बैच के गोल्ड मेडलिस्ट थे। कुछ वर्षों बाद प्रो. शैलेंद्र सिंह के सुपरविजन में यहीं से इकोनामिक्स आफ एजुकेशन विषय से पीएचडी की। एमए की पढ़ाई पूरी करने के बाद वर्ष 1974 में ही लेक्चरर के तौर पर अर्थशास्त्र विभाग में ज्वाइन किया था। 12 अप्रैल 2012 से 18 दिसंबर 2013 तक वह महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली के कुलपति रहे। उसके बाद डा. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा के भी कुलपति बने।

जुलाई में आए थे विभाग : जुलाई में लवि के अर्थशास्त्र विभाग में पुराने शिक्षकों को चाय पर चर्चा के लिए बुलाया गया था। प्रो. अग्रवाल ने बताया कि तब प्रो. मुजम्मिल ने विभाग को विस्तार देने के अनुभव साझा किए थे। उन्हें शिक्षक श्री सम्मान के साथ-साथ कामन वेल फेलोशिप भी मिली थी। अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर अरविंद मोहन ने बताया कि प्रो. मुजम्मिल को यंग साइंटिस्ट अवार्ड भी मिला था।

पीएचडी में महिला शोधार्थियों ने लिए सर्वाधिक प्रवेश

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय (लवि) को नैक ए प्लस प्लस ग्रेड मिलने के बाद शोधार्थियों का रुझान काफी बढ़ गया है। खासकर महिला शोधार्थियों की संख्या काफी बढ़ी है। सत्र 2020-21 में जहां 213 महिला शोधार्थियों ने पीएचडी में प्रवेश लिया था वहीं, नैक ग्रेड मिलने के बाद सत्र 21-22 में 632 महिला शोधार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया। मंगलवार को विश्वविद्यालय प्रशासन ने पीएचडी प्रवेश संबंधी आंकड़े जारी किए।

लखनऊ विश्वविद्यालय ने जारी किए आंकड़े, नैक ग्रेड मिलने के बाद सत्र 21-22 में 632 महिला शोधार्थियों ने शोध में लिया प्रवेश

लवि में पीएचडी का शैक्षिक सत्र पटरी पर आ गया है। बीते वर्ष 2021-22 के पीएचडी प्रवेश के बाद वर्तमान सत्र 2022-23 की आवेदन प्रक्रिया जारी है। विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डा. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि सत्र 2021-22 में लवि में विभिन्न देशों के 35 अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों ने शोध में प्रवेश लिया है, जो सत्र 2020-21 की तुलना में 100 प्रतिशत से अधिक है। सत्र 2020-21 में देश के 12 राज्यों के शोधार्थियों ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वहीं, सत्र 2021-22 में देश के 19 राज्यों के शोध विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया है।

वर्तमान सत्र के लिए 26 राज्यों से आवेदन : सत्र 2022-23 के पीएचडी प्रवेश के लिए आवेदन 19 फरवरी तक होंगे। अभी तक लगभग 60 प्रतिशत आवेदन महिला शोधार्थियों के आ चुके हैं। 26 राज्यों से शोध के लिए अभ्यर्थियों के आवेदन आए हैं। इसकी प्रवेश परीक्षा का कार्यक्रम जल्द ही जारी किया जाएगा।

पीएचडी में प्रवेश के लिए 19 तक आवेदन

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में पीएचडी में प्रवेश के लिए आवेदन की तिथि बढ़ा दी गई है। पीएचडी कोआर्डिनेटर प्रो. एहतेशाम अहमद ने बताया कि पहले आवेदन करने की अंतिम तिथि 11 फरवरी थी, इसे बढ़ाकर 19 फरवरी कर दिया गया है। विद्यार्थी दो हजार के साथ एक हजार रुपये विलंब शुल्क का भुगतान कर आवेदन कर सकते हैं।

पीएचडी का संशोधित अध्यादेश तैयार करने के लिए बनी कमेटी : लवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के आदेश पर पीएचडी के संशोधित अध्यादेश को तैयार करने के लिए कुलसचिव संजय मेधावी ने पांच सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत अध्यादेश को तैयार करने के लिए डीन एकेडमिक प्रो. पूनम टंडन को कोआर्डिनेटर, जियोलाजी विभाग के प्रो. विभूति राय, फैकल्टी आफ ला के प्रो. आरके सिंह, अप्लाइड इकोनामिक्स के प्रो. बिमल जायसवाल और इंग्लिश एंड मार्डन यूरोपियन लैंग्वेज विभाग के प्रोफेसर आरपी सिंह को सदस्य नामित किया गया है। यूजीसी ने चार वर्षीय स्नातक के बाद सीधे पीएचडी में प्रवेश देने सहित कई प्रविधान किए हैं। इन सभी को लवि अपने अध्यादेश में शामिल करेगा।

बीकाम आनर्स, बीसीए व बीबीए की परीक्षाएं 23 फरवरी से

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय की बीसीए, बीकाम आनर्स पांचवें सेमेस्टर व बीबीए पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं 23 फरवरी से होंगी। एमबीए पांच वर्षीय पांचवें सेमेस्टर बैकपेपर, सातवें और नवें सेमेस्टर की 27 फरवरी से होंगी। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि www.lkouniv.ac.in पर पूरा कार्यक्रम देख सकते हैं।

ये हैं परीक्षाओं की तिथियां : 23 फरवरी से 13 मार्च, सुबह नौ से दोपहर 12 बजे, बीसीए पांचवें सेमेस्टर 23 फरवरी से तीन मार्च तक दोपहर दो से शाम पांच बजे, बीबीए, बीबीए आइबी, बीबीए एमएस पांचवें सेमेस्टर एनईपी-23 फरवरी से चार मार्च-दो से शाम पांच बजे तक, बीकाम आनर्स प्रथम सेमेस्टर 27 फरवरी से 17 मार्च सुबह नौ से 12 बजे, बीसीए प्रथम सेमेस्टर 27 फरवरी से 13 मार्च नौ से 12 बजे, बीबीए, बीबीए आइबी, बीबीए एमएस प्रथम सेमेस्टर एनईपी-27 फरवरी से 18 मार्च-नौ से 12 बजे, बीकाम आनर्स तीसरे सेमेस्टर की परीक्षा 28 फरवरी से 16 मार्च दोपहर दो से शाम पांच बजे, बीसीए, तीसरे सेमेस्टर 28 फरवरी से 14 मार्च, बीबीए, बीबीए आइबी, बीबीए एमएस तीसरे सेमेस्टर एनईपी-28 फरवरी से 20 मार्च, एमबीए पांच वर्षीय प्रथम सेमेस्टर इक्जेम्टेड-28 फरवरी से 20 मार्च-नौ से 12 बजे तक, एमबीए पांच वर्षीय तीसरे सेमेस्टर इक्जेम्टेड, बैक पेपर-28 फरवरी को सुबह नौ से 12 बजे, एमबीए पांच वर्षीय पांचवें सेमेस्टर बैक पेपर-27 फरवरी को। नौ से 12 बजे, एमबीए पांच वर्षीय सातवें सेमेस्टर-27 फरवरी से 21 मार्च तक। एमबीए पांच वर्षीय नवें सेमेस्टर-27 फरवरी से 30 मार्च तक।

'खेती और उद्योगों पर ध्यान देने से ही तरक्की'

जागरण संवाददाता, लखनऊ : महात्मा गांधी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे लोग मानते थे कि विकास में संतुलन होना चाहिए। गरीबों और अमीरों के बीच खाई कम होनी चाहिए। खेती और उद्योगों पर बराबर ध्यान दिया जाना चाहिए, लेकिन समय के साथ यह संतुलन बिगड़ गया, जिससे यह खाई बढ़ती गई। अभी सरकार समाज के अंतिम व्यक्ति को बेहतर जीवन देने की कोशिश कर रही है। यह सब पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन का ही परिणाम है। ये बातें केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय ने कहीं। वह लखनऊ विश्वविद्यालय के दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तहत पं. दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व कृतित्व और राष्ट्र निर्माण में भूमिका विषय पर आयोजित व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल ने ही अंत्योदय से जुड़े कार्यक्रम शुरू किए। समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के जीवन में बेहतरी लाने के लिए बहुत सी पुस्तकें लिखीं। वर्तमान सरकार ने सभी गरीबों को शौचालय और छत दी। भारत आज सशक्त होते हुए अपनी रक्षा जरूरतों का 70 फीसद खुद उत्पादन कर रहा है। 2047 तक भारत दुनिया के विकसित देशों में शामिल होगा। पंडित दीनदयाल के जीवन की एक घटना का उदाहरण देते हुए कहा कि थोड़ा प्रयास हमें करना होगा और थोड़ा प्रयास वंचितों और पीड़ितों को करना होगा और दोनों के प्रयासों से मिलकर वंचितों और पीड़ितों की जीवन दशा बेहतर हो सकेगी। विशिष्ट अतिथि विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और संघर्षों के बारे में युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। कुलपति प्रो. आलोक राय ने कहा कि दीनदयाल शोधपीठ के माध्यम से विश्वविद्यालय आंगनबाड़ी केंद्रों के साथ काम करता है और जरूरतमंद लोगों की मदद करता है। दीनदयाल उपाध्याय सूची पीठ के निदेशक और समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनूप कुमार भारतीय, प्रो. अरविंद अवस्थी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रो. राकेश द्विवेदी ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से अमित श्रीवास्तव और गोद लिए गए गांवों के प्रधानों को सम्मानित किया गया।

लखनऊ विश्वविद्यालय के राधा कमल मुखर्जी सभागार में पं. दीनदयाल उपाध्याय पर आयोजित व्याख्यान में केंद्रीय मंत्री डा. महेंद्र नाथ पांडेय का सम्मान करते कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, साथ में उपस्थित विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा ● जागरण

RASHTRIAYA SAHARA PAGE 5

विकास में संतुलन जरूरी : महेन्द्र नाथ

'पं. दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व-कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषय पर व्याख्यान

कम होनी चाहिए गरीब व अमीर के बीच की खाई

केन्द्रीय मंत्री महेन्द्र नाथ पांडेय को सम्मानित करते लविवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय।

लखनऊ (एसएनबी)। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय के मंत्री डा. महेंद्र नाथ पांडे उपस्थित थे। मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता डा. महेंद्र नाथ पांडे ने कहा कि एकात्म मानववाद का मतलव मनुष्य के बीच में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना है और हर एक में समान आत्मभाव रखना है। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन की एक घटना का उदाहरण देते हुए कहा कि थोड़ा प्रयास हमें करना होगा और थोड़ा प्रयास वंचितों और पीड़ितों को करना होगा, दोनों के प्रयासों से मिलकर वंचितों और पीड़ितों की जीवन दशा वेहतर हो सकेगी।

उन्होंने कहा कि विकास में संतुलन होना चाहिए, गरीवों और अमीरों के बीच की खाई कम होनी चाहिए। खेती और उद्योगों पर वरावर ध्यान दिया जाना चाहिए, लेकिन समय के साथ यह संतुलन विगड़ गया, जिसके कारण यह खाई वढ़ती ही गई। उन्होंने वताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन वेहद ही सादगी भरा था जिसकी कल्पना आज के राजनेताओं में करना लगभग असंभव है। उन्होंने कहा की पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के जीवन हालात में वेहतरी लाने के लिए वहुत सी पुस्तकें लिखीं। उन्होंने कहा कि हमने यह मान लिया था कि सभी गरीवों को हम शौचालय नहीं दे सकते, सभी गरीवों की स्थिति में वेहतरी नहीं ला सकते, लेकिन वर्तमान सरकार ने न केवल सभी गरीवों को शौचालय दिया वल्कि सभी गरीवों के सर पर छत का भी संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि आज का भारत अपनी रक्षा जरूरतों का 70 फीसद खुद उत्पादन कर रहा है और निर्यात भी कर रहा है। उन्होंने कहा कि जव समाज कार्य के विद्यार्थी सरकारी योजनाओं में योगदान देंगे तो वह निश्चित वेहतर होंगी।

विशिष्ट अतिथि मुकेश शर्मा सदस्य विधान परिषद उत्तर प्रदेश ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और संघर्षों के वारे में आधुनिक युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। उन्होंने वताया कि समाज के अंतिम व्यक्ति को आगे लाने की आवश्यकता कर जोर देने के लिए उन्होंने वहुत सी किताबें लिखीं, साथ में उन्होंने पांचजन्य नाम की मासिक पत्रिका भी शुरू की। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अमित इकवाल श्रीवास्तव को पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से सम्मानित किया गया, साथ में गोद लिए गए गांवों के प्रधानों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रो. अरविंद अवस्थी, अधिष्ठाता कला संकाय, लविवि ने भी उद्वोधन दिया।

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

एलयू के छात्रों ने किया ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का दौरा

स्वतंत्र भारत संवाददाता ,लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के छात्रों ने आज ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का दौरा किया। इस दौरे का आयोजन और संचालन विभाग के फैकल्टी सदस्यों डॉ निशांत कुमार, डॉ राम सिंह और डॉ शिल्पी सिंह ने किया। छात्रों ने सभी प्रदर्शनियों और स्टालों का पता लगाया और विभिन्न स्टार्ट अप के कंपनी प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और एमएसएमई और वित्तीय क्षेत्र में विकास के बारे में जाना, जिससे उत्तर प्रदेश राज्य को काफी फायदा हो सकता है। यह यात्रा रक्षा, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण, हरित ऊर्जा और पैकेजिंग उद्योग जैसे क्षेत्रों में निवेश की जा रही पूंजी के प्रवाह को समझने में भी मददगार साबित हुई। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर संगीता साहू ने कहा कि दौरे के बाद जी20 पर छात्रों की जागरूकता और सीखने के लिए एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जाएगा। इस तरह की पहल छात्रों को कारोबारी माहौल के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती है।

राष्ट्रपिता ने पहले ही देखा था अंत्योदय का सपना

-पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व पर व्याख्यान

स्वतंत्र भारत संवाददाता ,लखनऊ। समाज कार्य विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका विषय पर एकदिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय के मंत्री महेंद्र नाथ पांडे रहे। कार्यक्रम की शुरुआत लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलगीत और सभी सम्मानित अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई।इसके बाद दीनदयाल उपाध्याय सूची पीठ के निर्देशक और समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनूप कुमार भारतीय ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने सभी गणमान्य अतिथियों एवं श्रोताओं को बताया कि दीन दयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना 2018-19 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा की गई यह शोधपीठ प्रत्येक वर्ष विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करता है विशेष व्याख्यानों का आयोजन करता है उसी के सिलसिले में आज के व्याख्यान का आयोजन किया गया है। इसके बाद प्रोफेसर अरविंद अवस्थी, अधिष्ठाता कला संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपना उद्बोधन दिया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय जी का दर्शन एकात्म मानववाद से जुड़ा था। वो समाज के अंतिम व्यक्ति के भले की बात करते थे। विशिष्ट अतिथि मुकेश शर्मा सदस्य विधान परिषद उत्तर प्रदेश ने अपने अपने उद्बोधन में कहा कि यह एक बेहद ही जरूरी कार्यक्रम है और इसके लिए शोध पीठ और विश्वविद्यालय बधाई के हकदार हैं। उनका कहना था कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और संघर्षों के बारे में आधुनिक युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। इसके उपरान्त लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने अपनी बात रखी। उन्होंने मुख्य वक्ता के बारे में बताते हुए कहा की मुख्य वक्ता पंडित दीनदयाल उपाध्याय की कर्मभूमि से आते हैं और वहाँ उसके लोकसभा क्षेत्र के सदस्य भी हैं। उन्होंने बताया कि पंडित दीन दयाल उपाध्याय के चिंतन उसके हिसाब से विश्वविद्यालय अपने काम को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। उनका कहना था कि कोविड के समय कोविड प्रभावितों की मदद के लिए विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षक,छात्र और पूर्व छात्र आगे आए। जिससे वंचित तबकों को लाभ प्राप्त हुआ। इसके बाद आज के मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता डॉक्टर महेंद्र नाथ पांडे मंत्री, भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा पिछले वक्ताओं ने जिस तरह से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को अब्राहम लिंकन और आधुनिक डेवलपमेंट से जोड़ा है वह महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जिस अंत्योदय की बात किया करते थे उस पर महात्मा गाँधी जी पहले से ही अपने लेखों के माध्यम से अपने कार्यों के माध्यम से आवाज उठाते रहे। उनका कहना था कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय गाँधी जी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन की एक घटना का उदाहरण देते हुए कहा की थोड़ा प्रयास हमें करना होगा और थोड़ा प्रयास वंचितों और पीड़ितों को करना होगा और दोनों के प्रयासों से मिलकर वंचितों और पीड़ितों की जीवन दशा बेहतर हो सकेगी।अंत में उन्होंने समाज कार्य विभाग के 50 वर्ष पूरे होने पर विभाग को बधाई दी। कार्यक्रम के दौरान पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से अमित इकबाल श्रीवास्तव को दीनदयाल उपाध्याय के विचारों, दर्शनों एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के प्रचार, प्रसार एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र उल्लेखनीय योगदान देने हेतु सम्मानित किया, साथ में गोद लिए गए गांवों के प्रधानों को भी सम्मानित किया गया कार्यक्रम के समापन से पूर्व प्रोफेसर राकेश द्विवेदी, मुख्य कुलानुशासक, लखनऊ विश्वविद्यालय ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने विशेष रूप से मुख्य अतिथि और इस कार्यक्रम के मुख्यवक्ता जी का धन्यवाद दिया की इस विषय पर उन्होंने इतना सुन्दर व्याख्यान सभी के सामने प्रस्तुत किया उन्होंने कहा कि इससे हमारे विश्वविद्यालय के छात्र और छात्राएं जरूर बहुत कुछ सीखेगी उन्होंने हमारे कुलपति विशिष्ट और सभी प्रतिभागियों का भी धन्यवाद किया।कार्यक्रम में लगभग 300 से अधिक प्रतिभागी शामिल रहे जिसमे अलग विभागों के शिक्षक एवं छात्र छात्राएं शामिल रहे।

TOI PAGE 3

'A prolific writer & poetry lover'

Isha.Jain@timesgroup.com

Prof Mohammad Muzammil

Lucknow: The sudden demise of Professor Muzammil is a shock for the city.

After he fell unconscious, he was admitted to a hospital in Gurgaon by the airline staff where he breathed his last. Recalling old memories, former VC of CSJMU, Kanpur, professor JV Vaishampayan, said: "He was fond of 'shayari'. He used to cite poetry almost on all occasions. His lectures were full of anecdotes. He will be missed."

He also wrote six books in Hindi, English and Urdu, besides several reports and projects, and over 100 articles in research journals. With a first class academic career, professor Muzammil was a gold medalist for having topped the MA (Economics) from the Lucknow University in 1974.

"As was the practice then, the course topper was appointed a lecturer. Muzammil too started off as a lecturer in economics department in 1974. He was both my student and colleague, and his demise is a big loss to the academic world," said professor Yasvir Tyagi, an economist, who was also professor Muzammil's teacher.

He had a vast experience of 37 years. "He was a gifted speaker whether to the students or to a mature audience. He was very methodical and organised," added professor Tyagi.

Professor Muzammil did his PhD in economics from LU. His thesis, 'Financing of education in UP', was later published as a book. Later, he did post-doctoral research on 'Human Development in South Asia' as a visiting fellow in the Oxford University.

The UP government conferred the Saraswati Samman on him in 2011, and Shikshak Shree in 2010 for his contribution to higher education. He was also a recipient of Govind Ballabh Pant Economics Award (2000).

HT PAGE 4

Prof Mohd Muzammil passes away

HT Correspondent
letters@htlive.com

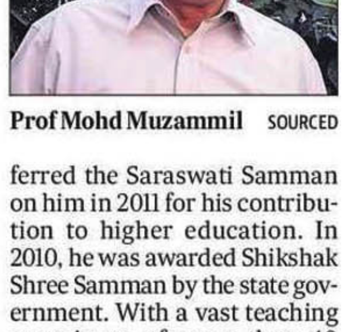

Prof Mohd Muzammil SOURCED

LUCKNOW: Prof Mohd Muzammil, former professor of economics department, Lucknow University, passed away on Tuesday. He was 70. He was also vice-chancellor of BR Ambedkar University, Agra and Mahatma Jyotibaphule Rohilkhand University, Bareilly.

Prof Muzammil suffered cardiac arrest at Delhi airport and was rushed to a private hospital by the airline company where he breathed his last. Prof Yashvir Tyagi, who taught him at postgraduate level, said that Muzammil was a gold medallist and did PhD from LU.

The UP government conferred the Saraswati Samman on him in 2011 for his contribution to higher education. In 2010, he was awarded Shikshak Shree Samman by the state government. With a vast teaching experience of more than 40 years, Prof Muzammil was well respected by one and all, said many of his colleagues.

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

पं. दीनदयाल का जीवन बेहद सादगी भरा था : डॉ. महेंद्र नाथ

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लविवि के समाज कार्य विभाग में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तहत पं. दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका विषय पर एकदिवसीय व्याख्यान का आयोजन मंगलवार को हुआ। इस आयोजन के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में भारी उद्योग मंत्रालय के मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से अमित इकबाल श्रीवास्तव को दीनदयाल के विचारों, दर्शनों एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के प्रचार, प्रसार एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में योगदान देने के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही गोद लिये गये गांवों के प्रधानों को भी सम्मानित किया गया। डॉ. महेंद्र नाथ पांडे ने कहा पं. दीनदयाल उपाध्याय जिसे अंत्योदय की बात किया करते थे उस पर महात्मा गांधी पहले से ही अपने लेखों और अपने कार्यों के माध्यम से आवाज उठाते रहे। पं. दीनदयाल गांधी से बहुत प्रभावित थे। उनका सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनके प्रयास से ही पहली बार आठ राज्यों में 1968 में गैरकांग्रेसी सरकार का गठन हुआ और अंत्योदय से जुड़े कार्यक्रमों की शुरूआत हुई थी।

TARUN MITRA PAGE 12

छात्रों ने जी-20 समिट का किया दौरा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के छात्रों ने मंगलवार को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का दौरा किया। इस दौरे का आयोजन और संचालन विभाग के फैकल्टी सदस्यों डॉ. निशांत कुमार, डॉ. राम सिंह और डॉ. शिल्पी सिंह ने किया। छात्रों ने सभी प्रदर्शनियों और स्टालों का पता लगाया और विभिन्न स्टार्टअप के कंपनी प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और एमएसएमई और वित्तीय क्षेत्र में विकास के बारे में जाना।

LOK SATYA PAGE 3

दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रपिता से बहुत प्रभावित थे

लखनऊ, लोकसत्य

पं दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय की बात किया करते थे। उस पर राष्ट्रपति महात्मा गांधी पहले से ही अपने लेखों के माध्यम से अपने कार्यों से आवाज उठाते रहे। पं दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रपिता से बहुत प्रभावित थे।

यह बातें भारी उद्योग मंत्रालय के मंत्री डॉ महेंद्र नाथ पांडेय ने मंगलवार को लखनऊ यूनिवर्सिटी सभागार में कहीं। वह समाज कार्य विभाग लखनऊ यूनिवर्सिटी में पं दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत 'पं दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषयक व्याख्यान में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने जनसंख्या स्थापना के कारणों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि एकात्म मानववाद का मतलब मनुष्य के बीच में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना है और हर एक में समान आत्मभाव रखना है। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन की एक घटना का उदाहरण देते हुए कहा की थोड़ा प्रयास हमें करना होगा और थोड़ा प्रयास वंचितों और पीड़ितों को करना होगा और दोनों के प्रयासों से मिलकर वंचितों और पीड़तिों की जीवन दशा बेहतर हो सकेगी।उनका कहना था कि विकास मैं संतुलन होना चाहिए, गरीबों और अमीरों के बीच खाई कम होनी चाहिए। खेती और उद्योगों पर बराबर ध्यान दिया जाना चाहिए। लेकिन समय के साथ यह संतुलन बिगड़ गया था। जिसके कारण से यह खाई बढ़ती ही गई। उनका कहना था महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमेशा जोड़ने का काम किया है। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है। अंत्योदय से जुड़ें कार्यक्रमों की व्यवस्थित शुरुआत 1977 में राजस्थान में भैरोसिंह शेखावत की सरकार ने किया, जिसमे बहुत सारे अन्त्योदय और वंचित वर्गों से जुड़ें लोगों की मदद के लिए कार्यक्रम बने। उन्होंने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन बेहद ही सादगी भरा था जिसकी कल्पना आज के राजनेताओं में करना लगभग असंभव है। उन्होंने कहा कि जब समाज कार्य के विद्यार्थी सरकारी योजनाओं में अपना योगदान देंगे तो वह निश्चित रूप से बेहतर होंगी। इस दौरान उन्होंने समाज कार्य विभाग के 50 वर्ष पूरे होने पर विभाग को बधाई दी। कार्यक्रम में पं दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से अमित इकबाल श्रीवास्तव को पं दीनदयाल उपाध्याय के विचारों, दर्शनों एवं सरकार से संचालित योजनाओं के प्रचार, प्रसार एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए और गोद लिए गए गांवों के प्रधानों को भी सम्मानित किया गया।

पं दीनदयाल उपाध्याय सूची पीठ के निर्देशक और समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो अनूप कुमार भारतीय ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार से वर्ष 2018 19 में स्थापित इस शोधपीठ कार्यक्रम की शृंखला में यह व्याख्यान है। शोध पीठ ने गांवों को भी गोद ले रखा है इसके साथ आज के दिन लखनऊ जिले के मॉल ब्लॉक, जनपद लखनऊ के तीन ग्रामों क्रमशः मवई खुर्द, देवरी ग़ज़ा एवं अकबरपुर को गोद लिया जाना है। प्रो एलयू के कला संकाय के अधिष्ठाता अरविंद अवस्थी पं दीनदयाल की वर्ष 1958 में लिखी किताब का जिक्र करते हुए बताया कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना का विरोध उन्होंने समाज के वंचित वर्गों के लिए कम प्रावधान होने के कारण किया। विशिष्ट अतिथि सदस्य विधान परिषद मुकेश शर्मा ने कहा कि यह एक बेहद ही जरूरी कार्यक्रम है। पं दीनदयाल उपाध्याय के जीवन और संघर्षों के बारे में आधुनिक युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। कुलपति प्रो आलोक कुमार राय ने बताया कि यूनिवर्सिटी की उपलब्धियां बताईं।